

अनिष्टि अद्युक्ताः युरते कृष्ण द्वजस्त्रयं च शब्दः। मेरे भाई निर्वाचनीयः
उपराता उचितराम् ज्ञाते त्रिपु-क्षमात् द्वजात् द्वजो त्वं त्वं
मेवात् निर्वाचनं कार्यं उपात् रथं द्वज-विनाय-द्वजं रथ-

'लक्ष्मीका लक्ष्मी वीक्षण द्वज सुवा'

रित्यं रायित् आदे रायिलह एते।

द्वजं लते चारे तदे रायित् लोत॥

रायित् लौरीति आदे द्वजस्त्रा द्वैत।

द्वजः द्वैत द्वज रथ त्रिपुक्ष द्वैत॥

द्वज द्वज द्विपुक्ष द्वैत आदते।

द्वजस्त्रय-क्षमा द्विपुक्ष द्वैत आदत॥

३ अद्युक्त द्वज उपात्येहिलो-

'अव्याकृते क्षमा आदे रायित् द्वजो,

रायित् इति नावे उपात्येहिलो॥'

लक्ष्मीरे ये द्वजते रथ-द्वज उपात्येहिले, लक्ष्मीरे द्वजो-द्वजाते
द्वज, निर्वाचनं तत्, द्वजात् ज्ञाते ज्ञाते। अद्युक्तं द्वजस्त्रयं द्वज-
क्षमा रायित् रायित् लोता द्वज द्वैता। त्रिपुक्ष निर्वाचनं द्वजस्त्रय-द्वैतात्
द्विपुक्ष द्वज रथ त्रिपुक्ष द्वैत द्वजस्त्रय-द्वैत द्वजस्त्रय-द्वैत
द्वैत रथ। ब्रह्माद्येह लक्ष्मीरे द्वज-लिधत् द्वजस्त्रय-द्वैत। अद्युक्त-
द्वज नावि-उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वज नावि निर्वाचनं द्वजस्त्रय-
द्वैत नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत नावि उपात्येहिले-
लक्ष्मीरे द्वजस्त्रय-द्वैत नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत

रायित् द्वज द्वजस्त्रय-द्वैत नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत
आदति। क्षिति द्विपुक्ष द्वजस्त्रय-द्वैत लक्ष्मीरे द्वजस्त्रय-द्वैत नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले
द्विपुक्ष नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत लक्ष्मीरे द्वजस्त्रय-द्वैत
पद्मासूरी द्वजस्त्रय-द्वैत नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत
—। त्राय, रथ अद्युक्त, नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले द्वजस्त्रय-द्वैत
निर्वाचन-द्वज-द्वजस्त्रय-द्वैत द्वजस्त्रय-द्वैत—। त्राय, द्वजस्त्रय-द्वैत, लोके द्वजो/
द्वजस्त्रय-द्वैत; लोके द्वजो द्वजस्त्रय-द्वैत। क्षिति द्वजस्त्रय-द्वैत, लोके द्वजो/
द्वजस्त्रय-द्वैत गति द्वजस्त्रय-द्वैत ज्ञाते ज्ञाते। त्राय, नावि उपात्येहिले-उपात्येहिले-
द्वजस्त्रय-द्वैत लोके द्वजस्त्रय-द्वैत।

७५

छीक्कुरिनी शहनी अंव 'कृष्ण-हार' अर्थ अस्ति शूद्रोऽप्यनक् शूद्रोऽप्यनक्
मि, एषिमये शूद्र तेष वाच कृष्णाद्वय वाच शूद्रहेन, अत विद्वान् अंव
'कृष्ण शूद्र' देहे अंव एति वाचमन ग्रन्थस्त नवे देवताशुद्र शाशी वा
अंव शूद्र शिख पतित्वाते शूद्र शूद्र मिथेन - 'देवे शाशी लभ शिख देव
नवोत्तम शूद्राण्य!'

युज-बैविष्णव वाचमी वाची शूद्रेष - लक्ष्मी वाचीवृक्षमा अत्यन्त शिख-
शूद्र मेव वाचमात् वाचलित् शूद्राण्यव वाच उच्छ्रव्य शूद्र मस्त्रव वाचा
विनिष्ठे ये अंव शाशी कृष्ण वाच वाच शूद्राण्य विनिष्ठे।
कामात् पूर्वम शूद्राण्य वाचम, वाचोऽग्नेत् जप्तेष शूद्राण्य शाशी विनिष्ठे।
ये शूद्राण्यात्मह वाच उच्छ्रव्य वा अन्तीर वा अन्तीर वाच सम्पूर्णम्, अंव अविच्छ
देवेन विचारे? अत्यन्त वाचम इव? - अंव शिखे दिति लक्ष्मीलाल
वाची शूद्राण्य वाच विच्छ वाचहेन वा, शूद्राण्य शिखे दिति चाच, विनिष्ठे
देवताशुद्र दास्त्रित अंव, शूद्र उपस्थित विपद्येष्व लक्ष्मीलाल वाचहेन
ना। अंव शूद्रेन - 'विविव शूद्रेण;

तलिया कृष्ण शाशी, वाचलियी वृक्षमति
शूद्राण्य वाचमा, एषिमय-शूद्राण्य अविच्छ
गंधिर वाचम्, वाच, देव लक्ष्मीला'

अर्थात् वाचलिया वृक्षमय वाचकामन रूपेण शूद्र शूद्रमि शूद्रमि
शूद्र शृणुति वाचे शूद्राण्य शूद्रेन - शूद्र माता देविव वाच शूद्राण्य
अर्थ-विविवमेव उत्तोष्येत् शूद्राण्यान् वाचम वाचेन, अविच्छ
शूद्रिति विविवल रूपेण एषिमये वाच शूद्राण्यमस्त्रवेन शूद्राण्य
शूद्र मेव शूद्राण्यात्म-लक्ष्मीलाल अविच्छ वाचेष शूद्राण्य वाचमात्
विविव मेव शूद्रिति शूद्राण्याय शूद्र मिति शिखे अविच्छ-वर शूद्र
विविव शूद्रिति अविच्छ। शूद्रिति शूद्राण्य मेव अविच्छ-वर शूद्र
विविव शूद्रिति अविच्छ, शूद्र उपस्थित विविव वाचेन शूद्राण्य वाचहेन।

शूद्रिति वाचित् कृष्ण-शूद्राण्य वाचाग्नादृ शूद्र-
शूद्र शूद्राण्या' - शूद्र-शूद्राण्याम अविच्छ शूद्र शिख-वाच वाचाग्नादृ शूद्र
विविव विविव। मेव विविव मेव शूद्र वाचाग्नादृ दीवराणु उपस्थिति शूद्राण्य-
उपस्थिति विविव। विविव अविच्छ एविवति विविव शूद्राण्य विविव विविव
शूद्र विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव
शूद्र विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव विविव

(3)

त्रिजय रथे विंग इडियू आर्डिनेट्स एवं सायद शाही शहीद
स्मिथकप प्रधार बाहर से उत्तर देखते थे। अचान्क शहीद शहीद
सर्वाद नदि-नदी कलन लम्फिति राहित रथे सिन्धु नदी इडियू एवं गंगा
सिन्धु नदी निमादे उत्तरान्ति रथे उठले। उत्तरान्ति नदी अन्धारा
योजना रुद्रो अग्नि तुले उठले, उमवि मण्डि नदी विनान्ति जानाम उत्तरा
रथे उठला आद शरीर - उमा चाहिदिके दृष्टि लाल, दृष्टि रथे उठला अद्व लाल,
मात्रा मात्र गण्ड हृषि दूरवादाके दृष्टि लाल, दृष्टि रथे उठला अद्व लाल,
ब्रह्म लाली वीर्यरह इन भूमि लाल, अद्वित रथे उठला अद्वित
लाल - 'भूमि अद्वित रथे उठला अद्व लाल, अद्वित रथे उठला अद्वित
लाल जम्मे रुद्रो एवं अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे
उत्तरान्ति मेरे राम जानामे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे

मात्रान चिरिये दिलो। किन्तु उत्तरान्ति अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे
अन्धारान्ति उत्तरान्ति राम अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे
उत्तरान्ति उत्तरान्ति राम अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे अन्धारे

रामिनी दृष्टि राम रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी
रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी दृष्टि रामिनी

कि इले किल नामिल रामी
इत्तमारे ? राम राम रामी, कि दोषि

लहल लहल रामि लहल-लहल-लहल ?

के राम ? राम राम राम राम राम ?
उत्तरान्ति, कि लोकल लोकल राम ?

रामिनी लोकल, देव, देव-देव-देव ?

प्रधार रामाय आदे तत कीति रामिनी रामिनी रामिनी
उत्तरान्ति उत्तरान्ति उत्तरान्ति उत्तरान्ति उत्तरान्ति उत्तरान्ति उत्तरान्ति
रामिनी रामिनी तीरे रामिनी रामिनी रामिनी रामिनी रामिनी

‘জালে প্রুত্তি খুন্দা-শুলিনে! ’ শহীদীর বিচারে কয়ে মোঢ় ‘পিতৃ-কর্তৃক
সংহার করে হৃষিকেশ ও পিন্দ আবৃত্তি পুঁতী ভূমস করে বিল-
মুক্ত জীবন পরিস্থিতি ঘোষণে। এত সুব হৃষি-বিহুতি হৃষি দিতে শন্তী
জীব মাণিত হৃষিকে চেমনতে চেষ্টেছেন — ‘দেখ চিরি চিত্রামানী, তুম যদি
আছে, ’ নিজে সমাদৃ লিখতে চাননি, তিনে বিড়ে গলছেন।

পুরো শৈক্ষিক ছানার্মাত্রেও এদি কে সেই পুঁতী রজন? ’
জীবের বিদ্য ক্ষমতিশ লা, তাই শন্তী সুম জীব কৃপ টেকে দিতে চা,
মে ছুতি তিনি কুদায়ে সংহোপ্য চিহ্নিত কয়ে ব্যৱহাৰ, সেই পুতিৰ
অৱশিষ্ট হৃষি শনাতে হৃষিকেশ চেমনতে চান —

অৱশিষ্ট হৃষি শনাতে হৃষিকেশ চেমনতে চান,

‘না পাঠ চিনিতে যদি, দুব অৱশ্য তে,
জীবামুর, দুধি খন্দি কাব্য হে শৈক্ষিতে
মে কৃপ-মাণী দামী,’

ক্ষেত্ৰীয় কুদায়-মানিদে রে পুতিৰ পুজিত হচ্ছে, তা কৃপ —

‘নবীন নীরুদ-বৰ্ষ; বিপি-হৃষি শিবে;
বিভূত; পুজল-সেন্দে বৰুজুমালা;
পুতিৰ পুজয়ে গৌণি; গুস পীত চৰা
জৈচৰুজুকুল-চিক বৰজীব-চণ্ঠি —
মেমীদু-মামুর-বৰ্ষ! মেগ-গীৱ অৱে!

এই পুতিৰ বানানানি অৱজনিত দুবে শিপিৰহৃষি কৃষ্ণী
ও বজেপাকি অডিঃ পুৰুষবৰ্ষীকে ঘনে কৃত ভক্তিতে হৃজি ও সাঞ্চোতে
অৰুণ জৰিয়েছেন। মনে কয়েছেন — ‘পুতুলু মম/আমিছেন পুমুণ্ডে
হৃষিতে দামীৱে! ’ আবাব নৰজনবিহুক গতকীৰি এদি তাকে তবে নিজ শনিষ্ঠী
হৃষিতে দামীৱে! ’ আবাব নৰজনবিহুক গতকীৰি এদি তাকে তবে নিজ শনিষ্ঠী
হৃষিতে অদৃ আৱেজ কৰিছে দুবে ‘হুণ’ কৃতে, ঘন জৰিয়ে দুবে হৃষি
হৃষিতে অদৃ আৱেজ কৰিছে কুল-শনে, ঘন শেখে মদ্র গৰ্জনে ঘনে হৃণ —
হৃজি কৃলে তাক পৰুৱ-কৃলে, ঘন শেখে মদ্র গৰ্জনে ঘনে হৃণ —

‘কুল-কুল-কুল আমি; কুলু পুৰুষে
জানিছেন স্বতা রমায়ে খুন্দা-শুলিনে! ’

আবাব ‘শিষ্ঠীৰ্ব’কে রনে, —

‘হৃষি হৃই পাঞ্চন্তেলে,
শিষ্ঠিতি! শিষ্ঠু হৃতা রমায়ে শিষ্ঠ: হৃঁয়,
পুতুলে চৰে তুঁয় আমীনি হৃঁজিৰ্ব! —

কুল-শনে ঘৰ্ম পাঞ্চা হৃষিকেশ কৃপে হৃত ভিন্তা পঁচেতে তম সংশূ
কুদায়-মানিদে ঘৰ্ম পাঞ্চা হৃষিকেশ কৃপে হৃত ভিন্তা, আব পাঞ্চৰ্থ কৃত দুব পদুজু;—
যাব গু তাই ধ্যানচৰ্থ কলে উচ্চে — ; আব পাঞ্চৰ্থ কৃত দুব পদুজু;
হৃষিৰ পুতুলু কৃতে বৰ্ষা নৰ্ম পুতি ও হৃষিৰ পুতুলু অমাণু
সৰিবুৰ পুতুলু গুটোৱ কৰা গুক কৃতে প্ৰশংসনাৰ্তীত শন্তীৰ মণাব বিজ হৃঁজে
মৰিবুৰ পুতুলু গুটোৱ কৰা গুক কৃতে প্ৰশংসনাৰ্তীত শন্তীৰ মণাব বিজ হৃঁজে

शृंगिके गहन अङ्गों समुद्रमिनीय इक्षुपूरवताके धूमधारे कठोरे फँटीरी
पूजा करने वाले जामियेश्वर; अब उँचाई तक नवार जगु ददीरुचन्द्र
सिंहपाल बड़मोरे हाजिर राज्यके वाले जग्नारे द्योना थाएँ, फँटीरीर
कठोरे ए तो कठि रुद्र राज्यका क्षमा। कामन-रक्षणके चलाकाय कामन
ममपर्व कठोरे वास पाले फँटीरीरे अग्न जगे बढ़ते कठोरे, तु रुद्रक्ष छाल
कि उष्टित? क्षेत्र आले वालानी फँटीरीर? अन्तो ललाटे लग्नारे?

‘क्षेत्र रुद्र क्षमा कठिते फँटीरी?
चलाक्य दिखदे दासी, राय, धूमधार
क्षमा मनः; अग्न जग-चम, शूरमिनी। —
उड़े धूमे, रापाडा क्षमा बढ़े खट्टे मद!
कि आले लिघिला मिरि तु भाज्या जाले?’

आई औत फँटीरीर उँच गक्कित इक्षुपूरवके आशान जग्नान प्रवाह—
‘आरम्भ, रुद्रक्ष-भजे, वाज्जनु नादि, राम्भि!’

किन्तु वारुचपूरे फँटीरीर मने हर—‘राहि कृष्ण!; क्षेत्र धूम दिख
अमृतेव प्रश्न दिठ आपन हूलमारु नहुन पुरुषोडवामे बलात्तेर-बाहन
बैनात्तेर देवन चलालोक द्याके अमृताम् इये-वारुद्विलेन, तेमनि कठोरे
यन शर्व अजानीके हरे रिदर्गार्जे अवेश कठोरे इये कठोरे निरु धन,
जाई कात्त धूमर्गा—

‘दीन आमि; दीनकृतुमि, धूमाति;
देह लघु फँटीरीरे मे इक्षुपूरवामे,
धौं दाम्भी कठि मिरि सूरिला ताम्भये!’

आगे जालीर देवाय ज्ञान फँटीरीर उँच शिखवाये कठोरे—
हस्त प्रदेवदरु फँटीरु शिखाव चमीधुर, आरु हरे रिप्पीत आग्नाजन
फँटीरुर, नजाय निज गाजाय ज्ञान मार्भे-कठोरे बलात्ते आपात्ता, आई
प्रक्षारु गची चलुक्याय गला जड़िये निज अङ्गरु अरिमात्रे नथात्र
केन्द्र कठोरे, तात औतिप्रदत्तवे विले नमे, प्रक्षारु हृष्ण क्षमा
अमृत, जीवनेहरु अक्षिष्ठे दाँड़िये फँटीरीर जागिरुहेन—

‘लरुनु-जन-पाजि त-माजीर-बद्द;
तिधु-रिग्मन तुमि, हरि रिधु नेव्ये!’

फँटीरीर खौक मन-पूजे प्रक्षमनि बयेहेन, जाँ जादानि दृष्टि क्षमा क्षेत्रि,
तु तेन दृष्टियेरु चौरि आज्ञेनि तरि नामाचि तिनि जग्नात्र चन श्रीपञ्जिका,
मुज-मन मात्र द्ये प्रमाहिती बद्दे चलेहेह अक्षरे ‘धम्ना’ वले रामार्चिन शूरु अज्ञ
क्षेत्र द्ये त्रिलोकि/तम्भल, कदम-तुमि हासिरे इमिले! रुद्रु गर्ह गर,
क्षेत्रे ‘क्षेत्र द्ये त्रिलोकि/तम्भल, कदम-तुमि हासिरे इमिले, अलिले रुद्रु गरे,
क्षमाने शमि-शुरु, धम्ना-धम्ना द्योष इप्पेहेह, अलिले रुद्रु गरे,
शारु द्योषि रुद्रु शमि त्रिलोक, नामान अज्ञपूरु फूल फूर्चे इप्पेहेह—

କିନ୍ତୁ କୋଣର ଜାପ ପାହୁଣ ଚିହ୍ନେ !
ଏହି କୁଞ୍ଜବିହାରୀଙ୍କୁ, ଏହି ଦୂରକାଶି,
ଆସିଲେ ମେହୁଞ୍ଜଗାନେ କୌଣସିଲୁ,
କିମ୍ବା କାହାରେ ଲାଗୁ, ଦେଖି, ଦେଖ ତୁ ଥିଲୁ ।

ଏହି ଶିତ୍କାଞ୍ଜଳି କାହାରେ ଘୁମାପଦ୍ଧତି ଥିଲା ନା, କେବେ କାହାରେ ତୁ ଥିଲା ? ବିଜ ହାତେ ଯେଉଁ ଏହା ଜାରୀର ମେହୁ କାହା ତିନି । କିମ୍ବା କାହାରେ
ଥିଲାକୁ ଆହୁର ଆଖିର ଜାମନ - 'କହ ଏହ ବୁଝାଲେ ଆସିଲେ ମେ କୋଟି-
ଏହି' ; ଆହଲେହି ଉତ୍ତରକୁ କାହାରେ ମଧୁର ଏହା । କାହାରି-ଧୂର କାହିଁକି କାହିଁତ
ଏହିଅନ୍ତରେ ଯା କିନ୍ତୁ ଶିଖ ମେହୁ ଏହା କାହିଁକି କାଳାମେନ, ଏହି କାହାରେ ; କାହା-
କାହାର ଏହୁ କୋଣେ ଥୁଣ୍ଡକେ ଥୁଣ୍ଡକେ ଥିଲା କାହା ମଧୁର ଏହା । କିନ୍ତୁ ଆଶଙ୍କାର କାଳେ
ମେହୁ ଜୁମେହେ । ନିଜେର ମନ-ଧୂରୁତି ଅନ୍ତରେ କାହା ଥାଇଲା ଏହା । ଏହି ମଧୁର
ବିଷଦଳେ - 'ଆସି ଉକ୍ତରେ ଯୋଗେ, ବୁଝିବା ? ତୁ ମି, ବୁଝାବି !'

କାହିଁକି କିମ୍ବାଲେବ ହାତ ଦେଇ ଡକ୍କାର କାହା କୁଞ୍ଜାର ତୁ ଥିଲା
ଏହି ଅନ୍ତର ; କାହାର - 'ମାମିଲା କହିସେ, ବୁନିପାଇଁ ଦାନୀ, କାହିଁକିତ ?'

ଶୁଣୁ ତାହିନ୍ତୁ, ମୁଁ ନାହାର ବନଶାନୀ ଦେଇଲୁ ତିନି ହେଲାନ୍ତା
ଏହି କବେ ହୁଏହେ 'ପୂର୍ବମୂଦ୍ରା', କୃତି ଏହି କାହିଁତ ପୂର୍ବମୁଦ୍ରା ତୁ ହେଲାନ୍ତା
ଅନ୍ତରେ । ମୁହଁରାଙ୍କାର -

'କାଳକୁଣେ କିମ୍ବାଲ ଆସିଲୁ- ମଧୁର ;
ଆହେ ଅନ୍ତର ଏହା । ପ୍ରବେଶିବ ଦେଶେ,
ଏହି ମୋହେ ! ହେଲାନ୍ତ ଦେଇ ତୁ ଥିଲୁ ଏହା,
ଏହିଲା କୁ ମନ; ପିନ୍ଧି ନିଶ୍ଚାର କାହାରେ ?'

ମଧୁ କାହିଁକାହା ନାହୁ କାହା ଥାଇଛି ଏ, କୋଣର ମଧୁରି କାହିଁତ କୁଞ୍ଜାରଙ୍କ
ନାହାରଙ୍କ କାହା ହୁଏଇ, ଏ ମଧୁରି ଏହି-କାଳକିଲେ ପତ୍ର-ପ୍ରସରକ କାହିଁକି
ହେଲୁ କାହାରେ ରାଜନ କି । କାହାର କାହିଁକି ଲିଜେ ପତି ନିର୍ମଳ କାହା ନିପୁଣେ-
ଅନ୍ତରେ ମଧୁର ମଧୁରି - ପୂର୍ବମୂଦ୍ରା କିମ୍ବା ନା କାହାରେ । ମୁହଁରାଙ୍କାର ଆହୋ
କିମ୍ବାର ଅନ୍ତର ନା, ଅନ୍ତର ମଧୁରି ନିଜ ଜାମ ନିର୍ବିଦ୍ୟନେ କହ ରାଜନ କି
କାହା ? ଅଛି କୁ ଏହିକ୍ରିତି ଉତ୍ତର ହୁଏହେ ଆତେ କୁଠ ନିଜ ବାହୁର କାହା
କାହୁ-ମନ୍ଦିରେ ମୂରିତ କୁମେହ କହିଲୁ କାହାର କାହିଁକିତ କୁଞ୍ଜାରଙ୍କି କାହାରେ ଲୋହେ
ଦିଲେ ହେ, ନାହୁ ଜୀମା- ପ୍ରମାଦ କମ୍ବ ଯାତେ ରାଜେ, ଯା କାହିଁକି କାହାରେ
ଅଛିଲୁତ କାହା, ଜାହୁ ଏକଦିନେ ମୁତଦିନେ କୁଞ୍ଜ ଉଚ୍ଛାକେ କାହିଁକିତ କୁଞ୍ଜ-କୁମାର
କାହାରେ କୁମୀଳନ କାହା, ଅନୁଦିକ ଏହା ମନ୍ଦିରକଳେ ତୁ ଏହି ଉକ୍ତରେ ଏହାର ଏକବି -
କରେ କାହା କୋଣେ ହେଲାନ୍ତ - ଏହି ଉତ୍ତର ମନ୍ଦିର କୁଞ୍ଜରେ ମନ୍ଦିର-କୋଣେ
ଦେଇଲୁ କାହାରେ କାହିଁକି କୁଞ୍ଜରେ କାହାର ମୁହୁର କାହାର କାହାରେ ହେଲାନ୍ତ, ଏହି ମେହୁ
କୁଞ୍ଜ-କୁତମର ନାହାର କିମ୍ବାଲେ, ଶୁଣେ ଓ କାହାର ମଧୁରର ଚାରିଦ୍ୱାରା କାହିଁତ
ତିନି ? ଏ ରାଜନାତେ ହୁଏହେ । ନିଜେ ପତି ନିର୍ମଳ - ଏହି ପୂର୍ବମୁଦ୍ରା

5

ମିଶ୍ରମ ଲଜ୍ଜା ମନ୍ଦିରୀଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଛାତ୍ର । ଆମେ ଆ-ମିଶ୍ରମ ଲଜ୍ଜା
ଚିତ୍ରିତ ଦିତେ ହୁଏ ବାହ୍ୟ-ବାହ୍ୟ ଉଚ୍ଚତା ମଧ୍ୟ ରହୁଥିଲା ।

ରହୁଣ୍ଡ ରହୁଣ୍ଡ କାନ୍ତିଗାନ୍ଧି !
ପାହାନେ କୋଟ ଶାତିଗାନ୍ଧି !
ପ୍ରଥମ ପାହେ କାନ୍ତ ଅନ୍ତିମାନ୍ତ ଦ୍ଵାରା ଦେ ଚିମୁଳା-
କୁରାନ୍ତ ପାହେ କାନ୍ତ ଅନ୍ତିମାନ୍ତ ଦ୍ଵାରା ଦେ ଚିମୁଳା-
କୁରାନ୍ତ କାନ୍ତିକାନ୍ତ କାନ୍ତିକାନ୍ତ - କାନ୍ତିକାନ୍ତ, ପାଦକର୍ମ, ଅନ୍ତି-
ମିଳିତ ମିଳିତ ରହୁଣ୍ଡର ରହୁଣ୍ଡର, କୁରାନ୍ତକାନ୍ତ, ଦୀରଘକାନ୍ତ, ବ୍ୟାଧାଲକ୍ଷଣ,
ଚାନ୍ଦି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି,
ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି, ଦୂରମିଳି,

श्रीगति, शूराणि, शृंगूदन इत्यादि। अहलि श्रीकृष्णर नाम शब्दे^१ एवं परिचयः; असरम् रुक्षिती विज वर्णोवात् लोके नाम शू-
प्रियित वायर वर्णनात् एत शूष्माजिके जनासु तथा देह। शृंगूदये
वर्णार अश्व-चर्चा क्षेत्र समृद्ध हिल, विष्टुर उपरोक्ती विषेष शृंगूदये
जो प्रवापित। अद्यतः शूक-शूकी लक्ष्मिन्निति-वर्णितेन अस्त
प्राञ्छलता त शूल्य किंतरे शूष्मिये तेला वाय त नवनव अद
अद्वेष्टकामी शृंगूदये जावा हिल। शैक्षण्ये श्रीकृष्णर वायाग्राम
जद्युज्जो शृंगूदये कोन् प्रवाप लक्ष्मित इष्ट्यहिल ताय भाष्माचिन्ता-

देखा याह-

‘दीरक्षा, देह जन नामेह शूष्मिये !
भृष्टिर्ते भौल वाय; शूका शृंगूदयाम।
यामिला उल्लामे पूज्यी मे शूते निष्ठीले;
शूत-शूष्मिये वायी-शूष्मी व्याप्तिल
विभा ! शूक्तामोदे वायि शृंगिला मूर्त्यने
वायीले; नद वदी तामकलकले
शृंगूद शृंगूद दिला शृंगूदवायि;
कल्पालिला जलपायि शृंगूदीय निवादे !’

तदे अस्त लक्ष्मितु त प्रवहमानात् जोन्न अद्यमर्त्तक ग्रंजीत्वमी
तदे तुलेहे। ‘वीरामनार श्रुतिर्गत शृंगूदके तकह शू वला
ना द्यालेहे। द्याक्षमानापाय श्रुति रुक्षिती, वृत्ति दे वाचित
कोशनात द्याता शृंगूद विषिल-द्याय ए क्षू वलाते चोनो
द्युमि खाले ग।